[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 8785 **IC**

Unique Paper Code : 12057609

Name of the Paper : भारतीय साहित्य : पाठपरक अध्ययन

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – C.B.C.S. – DSE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :-

(क) सब जातों की जड़ एक ही है,
कौन इस संसार में निर्धारित कर सकता है कि
किसकी प्रशंसा की जाए और किसकी निन्दा ?
क्यों हम किसी अछूत से घृणा करें,जब वह भी
हमारी तरह पैदा हुआहै, उसमें भी वह हाड़ मांस है,
उसकी कौन सी जाति है,
जो हम सबके अन्दर बसता है ?

P.T.O.

अथवा

आओ नाचें, गाएंगे, जी भर मोद मनाएंगे!
आनंद-छंद-मय, स्वतंत्रता पर मोद मनाएंगे!
बम्हन-ऐयर के रौब दबदबों के दिन अब बीत गए!
गोरांग फिरंगी लाट-साहबों के दिन अब बीत गए!
भिक्षादानों के दिन, भिखमंगी के दिन अब बीत गए।

(ख) हमारे घर के भीतर
बहुत सारी स्त्रियों के बीच जो कोई हो ऐसी
विधाता की सर्वप्रथम कृति सी
समझ लेना, बस वही है दूसरी मेरी जान
सहचर के अभाव में, कम बोलने वाली चकई
बहुतों के बीच भी अकेली
बड़ी ही बैचेनी से काट रही होगी वियोग के दिन
दिखाई देती होगी शिशिर ऋतु में पालों से बर्बाद कमलिनी की तरह।

अथवा

किसी दिन यहाँ महा ओंकार की अविराम ध्वनि
हृदय के तार में ऐक्य के मन्त्र से झंकृत हुई थी।

तप के बल से 'एक' के अनल में 'बहु' की आहुति दे
भेद-भाव भुलाकर एक विराट हृदय को जगाया था।
उसी साधना, उस आराधना की
यज्ञशाला का द्वार आज खुला है
सबको यहाँ सर झुकाकर मिलना होगा -
इस भारत के महामानव के सागर-तट पर।

(ग) भावना प्रधान महादेव अपने पौराणिक नाम राशि महादेव की तरह आशुतोष तो थे ही, साथ-साथ जरा-सा धक्का लगने पर निराश हो जाने का स्वभाव भी रखते थे। इसी कारण जीवन में प्राप्त हुई छोटी-छोटी निराशाओं ने उन्हें जीवन से तंग बना दिया होगा। तारुण्य के कारण इस निराशा की भवना का प्राबल्य बढ़ गया होगा।

अथवा

उसके उन उद्‌गारों से मैं थोड़ी देर के लिए मैं विचारमग्न हो जाताद्य। पश्चिम की ओर आँखों से ओझल होते हुए उस तेजस्वी बिम्ब की ओर मैं - एक बार ध्यानपूर्वक देखता। मेरे छोटे से मन में भावों का तूफान-सा आ जाता। एक हाथ से घोड़ों की वल्गाएँ संभालता हुआ, शोण की दृष्टि बचाकर, आँखों से ओझल होनेवाले उस तेज को मैं दूसरे हाथ से विदाई देता। मन में एक और ही तरह की व्याकुलता होने लगती। (3×10=30)

2. 'सप्तपर्णा' के आधार पर रामकाव्य के काव्य-सौंदर्य का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

नामदेव **अथवा** ललद्यद की भक्ति-भावना का विवेचन कीजिए।

3. वल्लतोल की काव्य सम्वेदना पर विस्तृत निबंध लिखिए। (15)

अथवा

'गीतांजलि' के आधार पर टैगोर की मानवीय चेतना की व्यापकता पर प्रकाश डालिए।

4. 'हयवदन' की पद्मिनी का चरित्र चित्रण कीजिए। (15)

अथवा

'अग्निकुंड में खिला गुलाब' शीर्षक की सार्थकता पर विचार करते हुए पाठ का सार लिखिए।